"कलात्मक प्रतीकों में तिलक की महत्ता"

प्रो० मोहन सिंह मावड़ी *
कंचन**

मनुष्य ने अपने मन में जागृत विचारों को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया एवं कला मानव मस्तिष्क की उच्चतम कल्पना है। "मात्र भौतिक जगत को मूर्त रूप में प्रस्तुत कर देना कला का एकमात्र कार्य नहीं है अपितु कला अमूर्त भावों, विचारों एवं धार्मिक सिद्धान्तों को आकार देने का भी विशेष कार्य करती है।"[1] किसी विशेष विचार की अभिव्यक्ति के लिए कला में रूपों का प्रयोग किया जाता है। "कलाकार के चित्रभूमि पर अंकन आरम्भ करते ही रूप का निर्माण आरम्भ हो जाता है।[2]

कला में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कला जगत के सूक्ष्म एवं निराकार विचारों, विश्वासों, मान्यताओं, परम्पराओं को आकार देने के लिए कला शिल्पियों ने प्रतीकों का सृजन किया। यही प्रतीक हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

प्रतीक वस्तुतः धार्मिक एवं दार्शनिक भावों तथा आध्यात्मिक मान्यताओं का सूक्ष्म रूप है। कला में प्रतीकों का उद्‌भव अनेक कारणों से हुआ। कल्याण की भावनाओं को व्यक्त करने हेतु मांगलिक प्रतीकों का सृजन हुआ।[3] धार्मिक भावना से प्रेरित होकर देव पूजन हेतु प्रतीकों का प्रयोग किया गया। इसी प्रकार धार्मिक क्रिया–कलापों में तिलक धारण करना अत्यंत प्राचीन परम्परा है।

प्रतीकों की रचना कलाकार द्वारा अपने कल्पना लोक में विचरण करने पर ही होती है जिसमें वास्तविक एवं यर्थाथता का समावेश प्रतीकों के सृजन में मिलता है।[4] आंशिक रूप से अचेतन मस्तिष्क पर पड़े प्रभाव को जब हम किसी चिन्ह या विशेष के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं तो प्रतीक स्वतः जन्म ले लेता है।[5]

***संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, दृश्यकला संकाय एवं चित्रकला विभाग, डी०एस०बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।**
****छात्रा, दृश्यकला संकाय एवं चित्रकला विभाग, डी०एस०बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।**

रंजन कला[6] कामसूत्र में वर्णित चौंसठ कलाओं के अन्तर्गत 8वीं रंजन कला (दाँतों, कपड़े, अंगों को रंगों से सवारने की विधि) के अन्तर्गत तिलक, चन्दन इत्यादि से मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करने हेतु अलंकरण एवं सुसज्जित किया जाता है। तिलक मस्तिष्क, बुद्धि, चिन्तन, ध्यान एवं एकाग्रता का प्रतीक है। तिलक ज्ञान रूपी ज्योति को प्रतिबिम्बित करता है। तिलक आस्था एवं उपासना का भी द्योतक है। तिलक की उत्पत्ति मस्तष्क के केन्द्र में लम्बवत् अथवा दीपक की लौ सादृश्य हुई होगी। तिलक ज्ञान लौ का एवं शुभता का प्रतीक है। तिलक दोनों भौहों के मध्य भाग में उज्ज्वलता का प्रतीक है। मस्तिष्क के मध्य भाग को भृकुटी कहते हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान एवं मस्तिष्क को जागृत करने का केन्द्र रहा है। भृकुटी मानव शरीर का एक ऐसा भाग है जो चाक्षुषीय ज्ञान का द्योतक है। भृकुटि को सम्मान देने के लिए तिलक का प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किया गया।

प्रतीक कला में आत्मनिष्ठा, कल्पना एवं अलंकरण इत्यादि की अभिव्यक्ति मिलती है।[7] भारतीय संस्कृति में सर्वाधिक ध्यान देने योग्य एवं बाह्य प्रतीकों में तिलक बुद्धिमता का भी प्रतीक है। तिलक मात्र धर्म एवं सम्प्रदाय का प्रदर्शन नही, अपितु यह बुद्धि की उपासना एवं आदर को भी प्रतिबिम्बित करता है। सनातन मान्यताओं के सबसे अधिक प्रदर्शित होने वाले चिन्हों में से एक है जिसे हम अपने मस्तक पर धारण करते हैं उसे तिलक या टीका के नाम से जानते हैं। दोनों भौंहों के मध्य का स्थान विचारशक्ति, एकाग्रता एवं स्मरणशक्ति के रूप में जाना जाता है उसी स्थान पर तिलक लगाया जाता है। तिलक ईश्वरीय आस्था एवं श्रद्धा को इंगित करता है। तिलक न केवल धारण करने वाले के भीतर अपितु उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के मन को भी आस्था के प्रति प्रेरित करता है। तिलक नकारात्मक शक्तियों एवं धारणाओं से हमारी रक्षा करता है। विभिन्न शास्त्रों में तिलक धारण करने की विभिन्न विधाओं का वर्णन किया गया है। जहाँ एक ओर तिलक मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करता है वहीं तनाव एवं चिंता से होने में ऊर्जा के क्षय को भी रोकता है। तिलक विहीन मस्तक ऐसा प्रतीत होता है जैसे बिना करूणा का हृदय। तिलक की महत्ता का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी मिलता है–

स्नान, दान तपों होमो, देवतापितृकर्म च।
तत्सर्व निष्फल याति, ललाटे तिलकं बिना।।[8]

अर्थात्–तिलक धारण किए बिना सभी जातियों के होम, तप, स्नान, देव–पूजन, पितृकर्म साधना एवं दान निष्फल हो जाते हैं।

तिलक व्यक्ति की जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं विश्वास के अनुरूप भिन्न–भिन्न आकार एवं रंग का होता है। वैष्णव अपने माथे पर चन्दन से 'यू' या 'वी' आकार

का तिलक लगाते हैं। श्री सम्प्रदाय अपने माथे पर 'वी' आकार का तिलक लगाते हैं जो भगवान विष्णु के चरणों को दर्शाता है तथा बीच में लाल रेखा लक्ष्मी देवी का प्रतीक है। चित्र– 1, 2

चित्र संख्या– 1

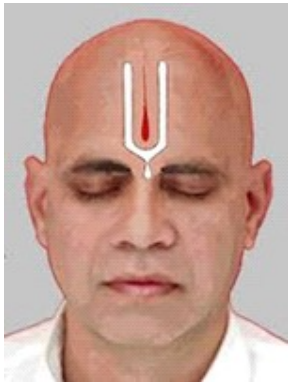

चित्र संख्या –2

विष्णु पुराण में भगवान विष्णु की विभूति का वर्णन भी प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।[9] बल्लभ सम्प्रदाय में तिलक आमतौर में एक खड़ी लाल रेखा होती है जो श्री यमुना जी का प्रतीक है। शैव भक्त अपने माथे पर पवित्र भस्म से तीन आड़ी रेखाओं का तिलक लगाते हैं। माता के भक्त अपने मस्तक पर एक लाल टीका लगाकर माता की आराधना करते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय में सभी तिलक ऊपर की ओर लगाये जाते हैं, परन्तु चिन्ह सम्प्रदाय विशेष के अनुरूप आकार ग्रहण करता है उसी प्रकार उसका तिलक निर्धारित होता है। चित्र – 3

प्रकृति की अपार शक्ति को भी प्रतीकों में इंगित किया जाता है।[10] शास्त्रों के अनुसार तिलक के बायीं ओर ब्रह्मा जी एवं दायीं ओर सदा शिव विराजमान हैं तथा मध्यभाग में श्री विष्णु का निवास है। अतः तिलक लगाने से व्यक्ति को युवा, निर्मल एवं चिर जीवन का वरदान मिलता है। तिलक ईश्वर भक्ति का आकर्षक प्रतीक है।

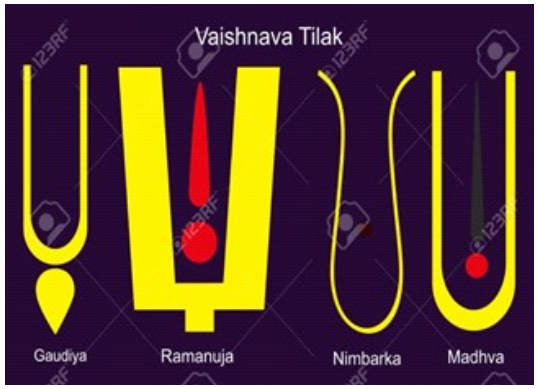

चित्र संख्या– 3

तिलक, टीका अथवा त्रिपुंड इन सभी का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मस्तिष्क शरीर रूपी सम्राज्य का संचालक है। मस्तिष्क के ऊपरी भाग को प्रमस्तिष्क कहते हैं जो शरीर में आने वाले संवेगों एवं सूचनाओं को ग्रहण कर शरीर के अंगों को आदेश भेजता है। यहॉ पिट्टयूरी ग्रन्थि है जो अतःस्त्रावी तंत्र की अधिनायक है, जिसमें स्मरण शक्ति, दृष्टि, श्रवण, संवेदना अन्य बहुत सी अदृश्य क्रियाओं का संचालन होता है। चित्र–4

चित्र संख्या – 4

तिलक सदैव भौंहों के मध्य 'आज्ञाचक्र' भृकुटी पर किया जाता है जो कि चेतना केन्द्र भी कहलाता है एवं यह चेतन–अवचेतन अवस्था में भी जागृत एवं सक्रिय रहता है।

तिलक लगाने से व्यक्तित्व प्रभावशाली प्रतीत होता है तथा इससे आत्मविश्वास व आत्मबल में वृद्धि (बढ़ोत्तरी) होती है। पुराणों के अनुसार हम मस्तिष्क से अधिक कार्य करते हैं जिससे ज्ञान तंतुओं के विचारक केन्द्र भृकुटि एवं ललाट के मध्य भाग में ऊर्जा उत्पन्न होती है तिलक इन तंतुओं को शीतलता प्रदान करता है।

तंत्र शास्त्र के अनुसार मस्तष्क में ईष्ट देव का स्वरूप है। हमारे ईष्ट देव की कृपा सदैव बनी रही इसी कारण तिलक लगाना चाहिए। धार्मिक कर्मकांड, मांगलिक कार्यों एवं पूजा में तिलक लगाया जाता है। किसी भी पूजा–पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि का शुभारंभ श्री गणेश से होता है। उसी प्रकार बिना तिलक धारण किए कोई भी मांगलिक कार्य आरम्भ नहीं होता। धार्मिक मान्यता के अनुसार मस्तिष्क को शुभता का प्रतीक माना जाता है। मस्तष्क पर तिलक लगाना मंगलमयी एवं शुभकारी होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– श्रीवास्तव, ए० एल० : भारतीय कला प्रतीक, पृ०13 उमेश प्रकाशन 100 लूकरगंज इलाहाबाद (1989)

2– सिंह, राकेश कुमार : चित्रण के सिद्धान्त, पृ०25 साहित्य संगम, नया 100, लूकरगज, इलाहाबाद, (2009)

3– श्रीवास्तव, ए० एल० : भारतीय कला प्रतीक, पृ०13 उमेश प्रकाशन 100 लूकरगंज इलाहाबाद (1989)

4– मावड़ी, मोहन सिंह : भारतीय कला सौन्दर्य, पृ०103 तक्षशिला प्रकाशन 23/4761, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली (2002)

5– मावड़ी, मोहन सिंह : कला सौन्दर्य के सिद्धांत, पृ060 तक्षशिला प्रकाशन 98–ए हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली (1994)

6– गोस्वामी, प्रेमचन्द्र : भारतीय कला के विविध स्वरूप, पृ०28 पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर (1997)

7– मावड़ी, मोहन सिंह : चित्रकला के मूल आधार, पृ०32 तक्षशिला प्रकाशन 98–ए हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली (2007)

8– बहल, आचार्य शशिमोहन : हमारे धार्मिक रीति रिवाज, पृ० 180 साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन 24, न्यू पिंकसिटी, पंचवटी, राजापार्क, जयपुर (2001)

9– श्रीवास्तव, विमलमोहिनी : प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक, पृ० 03 विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी (2002)

10– मावड़ी, मोहन सिंह : कला सौन्दर्य के सिद्धांत, पृ०65 तक्षशिला प्रकाशन 98–ए हिन्दी पार्क, दरियागंज,नई दिल्ली (1994)

11– Britannica, The Editors of Encyclopaedia "Tilak". Encyclopaedia Britannica, 24 feb,2010, https:// www.britannica.com/topic/tilak. Accessed 26 august 2021

****